

आध्यात्मिक जीवन में आने के बाद सामान्य से बहुत कुछ बदला है, और बदल भी रहा है, लेकिन हमारे अहम् के पैरों में आज भी थोड़ी-थोड़ी चोटें लग रही हैं, और वो भी ऐसी, जो हमारा परमात्मा से योग तोड़ने में अहम् भूमिका निभा रही है। कहते, अरे! मुझे इन बातों से फर्क नहीं पड़ता। अरे! तो कह क्यों रहे हैं?

चाहे दुनिया में कुछ भी हो रहा है, वहाँ सब कुछ सीमित सा लगता है, आपको भी लगता ही होगा। कारण, वहाँ उन्होंने अपने को दैहिक रीति से हर स्थान पर रखा, उसी से सम्बन्धित बातों से उन्हें परेशानी भी हो जाती है, उसी से सम्बन्धित विचार उन्हें तनाव में लाते हैं, यह है आम जनमानस की समस्या! इसे सभी कॉमन कहते हैं, लेकिन जो थोड़े ज्ञानी हो गए हैं, जिन्हें इन बातों से अब कुछ लेना-देना नहीं है, उन्हें हर बात में क्यों परेशानी हो रही है। क्या अभी भी कुछ नहीं बदला, या बदलना हम नहीं चाहते! दुःख का कारण ही 'ईगो' है।

परमात्मा हमें अपने जैसा बनाना चाहते हैं,

आज भी इतना ईगो!

लेकिन आज भी हम बदलने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं? नहीं ना! ज्ञान या समझ मिल गई, उसका सही नशा कि अब मेरा सब कुछ बदल गया, दैहिक स्वरूप से आत्मिक स्वरूप हो गया। लेकिन बस ज्ञान एक इनफॉर्मेशन के आधार से हमें मिला। उसमें परिवर्तन करने जैसा हमें कुछ



भी नहीं मिला।

परिवर्तन करने में क्या बाधा है, उस पर चर्चा करते हैं। हम यहाँ ज्ञान, समझ विकसित करते, उसके आधार से सबकुछ बदलता। यहाँ परमात्मा कहते हैं, जो जितना शरीर से मरेगा,

उतना चलेगा। हम मरना चाहते नहीं। अगर पुराने संस्कारों में, हमारे कुछ भी है, वह दुनिया का है, जब तक वो है, हम वही सबकुछ यहाँ भी करेंगे। कारण, पुराना सबकुछ दुःखदायी है। चलो यहाँ आकर भगवान की बातें सुनते कि सभी को सम्मान दो, सभी को खुश करो, सभी से प्रेम से रहो, आप थोड़ा बहुत रह भी लेते हैं। लेकिन यह फॉर्मूला लेवल पर यदि होगा, तो कुछ दिन में यह दिख जायेगा। जैसे ही आपके नाम, मान, शान की बात आयेगी, आप वहाँ आंतरिक फीलिंग्स को दिखा ही देंगे।

जब अंदर परिवर्तन होगा, आत्मा समझदार बनेगी, तो आप खुद को सम्मानित महसूस करेंगे, ये गैरंटी है। क्योंकि आपको अब इस बात का एहसास ही नहीं होगा, कि मैं किसी के द्वारा कुछ प्राप्त कर खुश हो रहा हूँ या दुःखी हो रहा हूँ। लेकिन हमारा अभ्यास इतना इस बात का कम है कि, मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ, वो परमात्मा के लिए नहीं, अपने लिए, वहीं से आप का दुःख शुरू हो जाता है। क्योंकि आप कुछ भी करके इंतजार करते हैं कि सभी मेरे बारे में कुछ बोलें। आज हमारा अनुभव कहता है कि कोई पढ़ाई के

लेवल पर भी किसी को स्वीकार करने को राजी नहीं है। सभी को लगता है कि वही सबसे अच्छे हैं, उन्हीं को हिन्दी अच्छी आती, अंग्रेजी अच्छी आती। इससे हो



- ब.कु. अनुज, दिल्ली

क्या रहा है कि आपके सीखने के दरवाजे बंद होते जायेंगे। सभी को परमात्मा ने जो हुनर दिया है, उसे किसने कितना बढ़ाया है, उसी आधार से ही वो चीज़ें सीख पाता वा कर पाता। लेकिन मुझे ही सबसे अच्छा आता है, तो आप उस चीज़ को बिगाड़ने के भाव से ही सुनेंगे या पढ़ेंगे, सीखने के भाव से तो बिल्कुल नहीं। और यही कारण है जीवन में सफल ना होने का।

अगर सार में कहें तो यह कह सकते हैं कि, सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है, अभी भी यदि किसी बात को लेकर हम परेशान रह रहे हैं, तो 'ईगो' बहुत है, उसे 'घोर ईगो' में कनवर्ट करना, हमें आगे ज़रूर बढ़ायेगा। आप जिस दिन इस भाव से जीवन जीयेंगे, आप परमात्मा द्वारा दिए गए जीवन को एन्जॉय करेंगे। हम जो कुछ, जो भी कर रहे हैं, उसमें खुशी इसलिए नहीं मिल रही, क्योंकि वो भगवान का समझ कर नहीं कर रहे हैं। जब आप ये करेंगे तो लोग कहेंगे, अरे! इनका 'ईगो' खत्म हो गया।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न:- बाबा हमेशा कहते हैं कि चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेने हैं, हम इसका विस्तार जानना चाहते हैं।
उत्तर:- ईश्वरीय पढ़ाई है चार विषय, ज्ञान, राजयोग, धारणा व ईश्वरीय सेवा। प्रथम व आधारभूत विषय है ईश्वरीय ज्ञान। उसकी हर बात में सम्पूर्ण निश्चय हो, यह ज्ञान स्वयं भगवान दे रहे हैं - यह निश्चय व नशा रहे। ईश्वरीय ज्ञान की मुरली का सम्पूर्ण महत्व रहे व मुरली का सुख लें। ज्ञान-मनन द्वारा ज्ञान की सूक्ष्मता को जान लिया हो व जीवन ज्ञानयुक्त होता चले। ज्ञानी का लक्षण है मान-अपमान, हार-जीत, निन्दा-स्तुति व सुख-दुःख में समान रहना। इन आधारों पर अपने ज्ञान के विषय का आकलन कर सकते हैं।

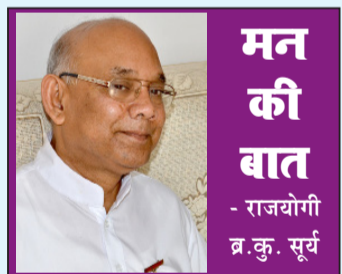
यदि आपमें फीलिंग की बीमारी है, यदि आप वही रटा-रटाया ज्ञान देते हैं, यदि ज्ञान के साथ जीवन में अज्ञान की भी छाया है, यदि आप मुरली मिस करते हैं, यदि आपका निश्चय डाँवाडोल रहता है तो अंक कम हो जाएंगे।

राजयोग में...आपका योग यदि प्रतिदिन आठ घण्टे है, यदि आप कर्मयोगी हैं, यदि आप स्वमानधारी हैं, यदि आपको नशा है कि भगवान मेरा है, यदि आप सेकण्ड में अशरीरी हो सकते हैं, यदि आप मन-बुद्धि को मनचाही स्थिति में स्थित कर सकते हैं तो आपके फुल अंक होंगे।

राजयोग में...आपका योग यदि प्रतिदिन आठ घण्टे है, यदि आप कर्मयोगी हैं, यदि आप स्वमानधारी हैं, यदि आपको नशा है कि भगवान मेरा है, यदि आप सेकण्ड में अशरीरी हो सकते हैं, यदि आप मन-बुद्धि को मनचाही स्थिति में स्थित कर सकते हैं तो आपके फुल अंक होंगे।

धारणा में... संतुष्टता, सरलता, पवित्रता, निरहंकारिता व निर्भयता के आधार से आप अपने अंकों को जान सकते हैं। यदि आपमें क्रोध है, अहं है या लोभ-मोह है तो आपके अंक कट जाएंगे।

सेवा में... निष्काम भाव, निमित्त भाव, निर्मल वाणी-युक्त सेवा फुल



अंक दिलायेगी। सेवाओं से सुख देना, टकराव में न आना, दूसरों को आगे बढ़ाना व सच्चे दिल से, जो भी सेवा मिले उसे पूर्ण करना तथा अपनी सेवाओं से बड़ों को निश्चिन्त रखना-इससे सेवा में फुल मार्क्स मिलेंगे।

प्रश्न:- बाबा कहते हैं, स्वर्ग के राज्याधिकारी वही बनेंगे जिनसे समस्त ब्राह्मण परिवार को स्नेह व सहयोग मिलेगा तथा जो सबके दिलों पर राज करेंगे। तो हम सबको स्नेह व सहयोग कैसे दे सकते हैं व सबके दिलों पर राज करना तो कठिन काम है। कई लोग तो हमारे ही दिल पर राज करते हैं। प्लीज़ सरल करके बताइये।

उत्तर:- यदि हम इस दृष्टि से सबको देखते हैं कि ये हमारा परिवार है, ये

सब देवकुल की महानात्माएँ हैं, तो हमसे सबको प्रेम की तरंगें पहुँचती रहेंगी। अवगुण दृष्टि व घृणा भाव इसमें बाधक है। सबको मदद करने की वृत्ति, सब आगे बढ़ें, हम सबको चांस दें, सबको सिखायें व आगे बढ़ायें तथा सबको वायब्रेशन्स दें। इससे हमारा सहयोग सबको प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु यदि हम दूसरों को आगे बढ़ने देना नहीं चाहते, यदि हमें उनके आगे बढ़ने से असुरक्षा महसूस होती है तो हम सर्व के सहयोगी नहीं बन सकते। हर क्षेत्र में हम दूसरों को मदद करें व परिस्थितियों में उन्हें साथ दें। छोड़ न दें। रही बात सबके दिलों पर राज करने की, तो जिनकी स्थिति महान है, जो नम्रचित्त हैं, जो संतुष्ट हैं व स्वमानधारी हैं, जो सबको सुख देते हैं व जिनकी वाणी शीतल है, वे ही दूसरों के दिलों में बसते हैं। क्योंकि जिसको सब मन से अपना राजा स्वीकार करेंगे, वही राजा बनेंगे, इसमें यहाँ के पद पोजीशन का महत्व नहीं है।

प्रश्न:- मुझे सहन बहुत करना पड़ता है, अब और ज़्यादा सहन होता नहीं, मैं बहुत थक चुकी हूँ, खुशी चली गई है, मैं क्या करूँ? हमारे बड़े हमें बार-बार टोट कसते हैं, बुरा बोलते हैं, आखिर सहन भी कब तक करें?

उत्तर:- निःसंदेह ऐसे में सहन करना सहज नहीं होता। दूसरा बोलता ही

जाए और आप रोते ही रहें, यह सदा तो नहीं हो सकता। ऐसे में आप सभ्यता पूर्वक जवाब देना अवश्य सीखें। चुप रहने से अहंकारी का अहंकार भी बढ़ जाता है। जब आप यथार्थ उत्तर देने लगेंगे तब आपका मन भारी नहीं रहेगा। परन्तु ध्यान रहे कि इसमें अपनी स्थिति न बिगड़े।

वो सहन करना जिसमें खुशी चली जाए और आप बीमार रहने लगें, तो ऐसे में आप सहन न करें। उनसे कुछ समय अलग रहकर अपनी तपस्या करें ताकि आपकी शक्ति बढ़ जाए। सहन करना वही यथार्थ है जिसमें आपको यह महसूस ही न हो कि आप सहन कर रहे हैं। यदि आपको लगता है कि मुझे बहुत सहन करना पड़ता है, तो आप अपनी सहनशीलता को बढ़ायें।

इसके लिए सवेरे उठते ही पाँच बार याद करें कि मैं सहनशीलता की देवी हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व मेरे पास सम्पूर्ण सहनशक्ति है। ऐसा इक्कीस दिन अवश्य करें। इससे आपकी सोई हुई सहनशक्ति जागृत हो जाएगी।

आप अपने स्वमान को बढ़ायें। मैं एक महानात्मा हूँ, मैं इष्ट देवी हूँ, इसको सारे दिन में पच्चीस बार अवश्य याद करें। आप पायेंगे कि कोई आपसे ऐसा दुर्व्यवहार करेगा ही नहीं।



गुमला-झारखण्ड। ग्राम विकास मेले के दौरान विधायक शिव शंकर उराँव को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब.कु. शांति।